इकाई 3 प्लेटो : न्याय*

संरचना

3.0 उद्देश्य
3.1 प्रस्तावना
3.2 प्लेटो से पूर्व न्याय पर परिप्रेक्ष्य
  3.2.1 पारम्परिक दृष्टिकोण
  3.2.2 उग्रसुधारवादी दृष्टिकोण
  3.2.3 व्यावहारिक दृष्टिकोण
3.3 प्लेटो के न्याय की अवधारणा
  3.3.1 तीन वर्ग और तीन आत्माएँ
  3.3.2 साम्यवादी सिद्धांत
    3.3.2.1 प्लेटो और मार्क्स का साम्यवाद : एक तुलना
  3.3.3 व्यक्तिगत और राजकीय स्तर पर न्याय
  3.3.4 आलोचनात्मक मूल्यांकन
3.4 प्लेटो और भारतीय राजनीतिक विचारक
  3.4.1 प्लेटो और कौटिल्य
  3.4.2 सुकरात, प्लेटो और गाँधी
3.5 सारांश
3.6 कुछ उपयोगी संदर्भ
3.7 अपनी प्रगति जाँचें अभ्यासों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

यह इकाई प्लेटो के न्याय की अवधारणा पर विचार करती है, जो इस विषय पर सबसे प्रारंभिक कृतियों में से एक है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे :

- न्याय पर, प्लेटो से पूर्व के विचारों की जानकारी से,
- प्लेटो के न्याय की अवधारणा का वर्णन से,
- प्लेटो के न्याय की अवधारणा की कुछ कमियों के विश्लेषण से।

*डॉ. राज कुमार शर्मा, सलाहकार, एसओएसएस, इग्नू

3.1 प्रस्तावना

प्लेटो का जन्म एथेन्स के एक कुलीन परिवार में हुआ। उसका असली नाम एरिस्टोक्लीस था जिसका अर्थ सर्वोत्तम और प्रख्यात होता है। उसके कुश्ती प्रशिक्षक ने उसके चौड़े और बलवान कंधों के कारण उसे प्लेटो नाम दिया। वह सुकरात का सबसे प्रख्यात शिष्य था और वह स्वयं अन्य यूनानी महापुरूष, अरस्तू का गुरु था। सुकरात के अलावा, प्लेटो यूनानी दार्शनिकों, पारमेनिडीस, जिसे तत्वमीमांसा का जनक भी कहा जाता है, हैराक्लिटस और में द रिपब्लिक, दि स्टेट्समैन ओर दि लॉज़ शामिल हैं। प्लेटो को व्यापक रूप से दार्शनिक आदर्शवाद के संस्थापक के रूप में देखा जाता है क्योंकि उसका विश्वास था कि जो इन्द्रियाँ अनुभव कर सकती हैं, उससे परे एक सार्वभौमिक विचार है। प्लेटो का जीवन एथेन्स और स्पार्टा के बीच 431 से लेकर 404 ई. पू. के बीच पेलोपोनेशियन युद्ध की विनाशकारी अवधि में फैला हुआ था, जिसका परिणाम एथेन्स की पराजय थी। शायद पेलोपोनेशियन युद्ध की अवधि के दौरान अनुभव की गई उपस्थिरता और अव्यवस्था के गहरे प्रभाव के कारण प्लेटो का न्याय का सिद्धांत सामंजस्य की मान्यता पर आधारित था।

प्लेटो और अरस्तू से लेकर जॉन रॉल्स जैसे राजनीतिक दार्शनिकों ने सत्ता को नियंत्रित करने के लिए न्याय को मुख्य मार्गदर्शक के रूप में देखा है। राजनीतिक व्यवस्था को कायम रखने, आकार देने और सुधारने में, न्याय एक मुख्य भूमिका निभाता है। प्लेटो की मुख्य कृति, दि रिपब्लिक एक ग्रंथ है जो न्याय के बारे में है। ग्रीक भाषा में, रिपब्लिक का अर्थ न्याय होता है, लैटिन में उसके अर्थ से भिन्न, जो राज्य या शासन व्यवस्था होना है। यह ग्रंथ इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करती है –न्याय क्या है और क्या यह व्यक्तियों ओर राज्यों के लिए एक वांछित सद्गुण है। चूंकि यह एक आदर्श अवधारणा की चर्चा करना है, इस ग्रंथ को अक्सर दर्शनशास्त्र की काल्पनिक कृति कहा जाता है। प्लेटो ने रिपब्लिक की रचना सुकरात और उसके मित्रों के बीच न्याय के सद्गुण पर एक संवाद के रूप में की। सुकरात सत्य को स्थापित करने के लिए द्वंद्वात्मक पद्धति (संवाद के रूप में) को विकसित करने वाला पहला व्यक्ति था। इसे ग्रीक भाषा में एलेन्चस कहा जाता है जिसका अर्थ खंडन या गलत साबित करना होता है। सुकरात किसी के साथ भी एक संवाद प्रारंभ करना था और सौंदर्य, न्याय या सत्य के अर्थ की चर्चा करना था। वह उस व्यक्ति से किसी भी चीज़ के बारे में उसकी परिभाषा के संबंध में पूछता था और उस संवाद को आगे बढ़ाने के लिए, प्रति परीक्षा के माध्यम से उसे अपनी परिभाषा में किसी असंगति का एहसास दिलाता था। यह पद्धति सुकरात के लिए इतनी महत्वपूर्ण थी कि उसने अपने विचारों को लिखने से इनकार कर दिया क्योंकि उसका विश्वास था कि गुरु और उसके शिष्यों के बीच प्रतिक्रियात्मक पारस्परिक क्रिया ही चिंतन करने का सच्चा तत्व था।

3.2 प्लेटो से पूर्व न्याय पर परिप्रेक्ष्य

पाइथागोरस, जो एक प्राचीन यूनानी दार्शनिक था और वह भी था जिसनें प्लेटो को प्रभावित किया था, उसने प्लेटो से पूर्व न्याय की अवधारणा के बारे में अपने विचार व्यक्त किए थे। पाइथागोरस का संख्याओं की शक्ति में विश्वास था और उसने कहा कि न्याय स्वयं का गुणज है, अर्थात् वह एक वर्ग संख्या है। एक वर्ग संख्या सामंजस्य का प्रतिनिधित्व करती है क्योंकि वह समान भागों से बना है। अतः उसने न्याय को समानता

के बराबर माना। एक राज्य को न्यायपूर्ण बने रहने के लिए समानता को सुरक्षित रखना चाहिए। पाइथागोरसवादी विचारधारा नीतिशास्त्र और जीवन के नैतिक नियंत्रण को केंद्रीयता देने के लिए प्रसिद्ध थी। प्लेटो के न्याय की अवधारणा में नीतिशास्त्र और सामंजस्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सुकरात और अन्य लोगों के बीच एक संवाद के माध्यम से, प्लेटो ने, विषय पर अपने स्वयं के विचारों की अभिव्यक्त करने से पहले, न्याय पर कुछ परिप्रेक्ष्यों का परीक्षण किया है।

3.2.1 पारम्परिक दृष्टिकोण

दि रिपब्लिक में, न्याय के संबंध में पारम्परिक विचारों को पिता–पुत्र की जोडी, सेफलस और पोलमार्कस द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। जब सुकरात ने सेफलस से न्याय पर उसके विचारों के बारे में पूछा, तो उसने कहा कि न्याय के अन्तर्गत सच बोलना, ईमानदार होना और अपना कर्ज़ अदा करना शामिल होते हैं। परन्तु सुकरात ने उसकी परिभाषा में कुछ असंगतियों की ओर ध्यान दिलाया। यदि हमारा कोई मित्र, जिसने हमें अपना हथियार दिया हो, पागल हो जाता है, उसे हम उसका हथियार वापस दे तो वह न्याय नहीं हो सकता। उसने यह भी ध्यान दिलाया कि कुछ मामलों में, ईमानदार होना और सच बोलना फायदे की जगह हानि पहुँचा सकता है और ऐसे मामलों में सच को छिपाना बेहतर होता है। जब सेफलस ने अपने तर्क को छोड़ दिया, तब उसके पुत्र, पोलमार्कस यह कहते हुए आगे ले गया कि हर व्यक्ति को उसका श्रेय देना न्याय होता है, अर्थात् अपने शत्रुओं को हानि पहुँचाना और मित्रों की मदद करना। सुकरात एक बार फिर, इस परिभाषा की कमियों की ओर इशारा करना करना है। वह कहता है कि मित्रों की मदद करने मे चोरी करने और झूठ बोलने जैसे अनैतिक कृत्य शामिल हो सकते हैं। एक व्यक्ति को अपने मित्रों और शत्रुओं के बारे में गलतफहमी हो सकती है और ऐसे में मित्रों की भलाई करना और शत्रुओं को हानि पहुँचाने वाला नियम लागू नहीं हो पाता। किसी को हानि पहुँचाना, उस कर्ता को कम न्यायपूर्ण या कम श्रेष्ठ बनाता है जबकि न्याय का संबंध श्रेष्ठता से होता है।

3.2.2 उग्रसुधारवादी दृष्टिकोण

न्याय पर उग्र–सुधारवादी परिप्रेक्ष्य थ्रेसीमेकस द्वारा दिया गया, जो एक सोफिस्ट (कृतर्की) और अलंकारशास्त्र का गुरु था। सोफिज़्म (या कुतर्कवाद) सुकराती परम्परा की प्रतिद्वंद्वी विचारधारा थी जो लोकतंत्र, व्यक्तिवाद और सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक थी। थ्रेसीमेकस ने न्याय को मज़बूत पक्ष के हित के रूप में परिभाषित किया है, जिसे, जिसकी लाठी, उसकी भैंस अर्थात् (जो ताकतवर होता है, उसी की बात माननी पड़ती है, भी कहा जा सकता है। इसी प्रकार का भाव यूनानी इतिहासकार और सेनापति थूसिडायडीस ने भी अभिव्यक्त किया है, जिसे राजनीतिक यथार्थवाद और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का पूर्वज माना जाता है। सुकरात ने उत्तर देते हुए यह कहा कि ताकतवर लोग भी गलतियाँ कर बैठते हैं और ऐसे कानून बना देते है जो उन्हीं के लिए हानिकारक होते हैं। ये इस सिद्धांत का उल्लंघन करता है कि ताकतवर लोगों द्वारा शक्ति के प्रयोग का लक्ष्य अपने निजी–हित की सेवा करना होता है। वह आगे बढ़ते हुए यह कहता है कि एक चिकित्सक का उचित उद्देश्य होता है अपने मरीजों का इलाज करना, ठीक वैसे ही जैसे एक जूता बनाने वाले का हित अपने ग्राहकों के लिए बढ़िया जूते बनाने में होता है। इसी प्रकार, एक राजनेता का वास्तविक हित उसकी प्रजा के कल्याण में होता है।

3.2.3 व्यावहारिक दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण को प्लेटो के भाइयों ग्लोकॉन और एडेइमैंटस द्वारा समर्थन मिला। उन्होंने न्याय को भय की संतान और कमज़ोर लोगों की आवश्यकता माना। हॉब्स के समान, सामाजिक समझौते के सिद्धांतकारों की तरह, उनका विश्वास था कि प्राकृतिक अवस्था से बाहर निकलने के लिए (जिसमें घोर अन्याय व्याप्त था), लोगों ने किसी के प्रति भी अन्याय ने करने और साथ ही, किसी के द्वारा अन्याय का शिकार न बनने का समझौता किया। अतः लोगों ने कानून के अन्तर्गत न्यायपूर्ण तरीके से आचरण करना स्वीकार किया। फिर भी, सुकरात ने तर्क दिया कि न्याय एक कृत्रिम सद्‌गुण नहीं है जो एक समझौते से उत्पन्न हो सकता है। इसके विपरीत, न्याय आत्मा और अंतःकरण का एक स्वाभाविक गुण होता है। न्याय अपने आप में स्वतंत्र रूप से मौजूद होता है और इसे किसी बाहरी मान्यता की आवश्यकता नहीं होती है।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 1

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) न्याय पर पोलमार्कस के दृष्टिकोण के प्रति सुकरात का क्या उत्तर था ?

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 प्लेटो के न्याय की अवधारणा

न्याय की प्रचलित अवधारणाओं का परीक्षण करने के बाद, प्लेटो अपने न्याय का सिद्धांत प्रस्तुत करता है। न्याय, चार मूल यूनानी सद्‌गुणों में से एक था – अन्य तीन थे विवेक या समझदारी, साहस या धैर्य, संयम या आत्म नियंत्रण। यूनानी दार्शनिकों ने न्याय को क्रिया में सद्‌गुण के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने न्याय की परिकल्पना हमेशा सामंजस्य और व्यवस्था के रूप में की, चाहे उसका प्रयोग उन्होंने व्यक्ति, राज्य या सृष्टि के लिए किया। सुकरात से पूर्व यूनानी कॉस्मॉस (ब्रह्मांड) का वर्णन करते थे जिसका अर्थ न्यायोचित व्यवस्था होता है। समन्वय और व्यवस्था का विचार न्याय के समकालीन उपयोग में निष्पक्षता के रूप में स्पष्ट दिखाई देता है। ग्रीक भाषा में, न्याय के लिए 'दिकाइयोसाइन' शब्द है, जिसका अर्थ ने की या न्यायसंगत होता है। प्लेटो का न्याय, कानून पर नहीं बल्कि नैतिकता और नीतिशास्त्र पर आधारित था। यह अपने कर्तव्यों को निभाने और समाज के प्रति अपनी व्यक्तिगत क्षमताओं के अनुसार योगदान देने में प्रतिबिंबित था।

प्लेटो का सुकरात के इस कथन में विश्वास था कि सद्‌गुण ही ज्ञान है और ज्ञान राजनीतिक बुराइयों और अन्याय का उन्मूलन कर सकता है। प्लेटो के लिए, आदर्श राज्य चार मूल सद्‌गुणों से युक्त था। ज्ञानी शासकों के कारण विवके प्रचलित होगा जबकि

साहसी योद्धाओं के माध्यम से शौर्य विद्यमान होगा। शासक कौन होगा, इस विषय के संबंध में सामान्य समझ के परिणामस्वरूप समाज में सद्भावना के कारण आत्मनियंत्रण होगा और अन्त में न्याय प्रचलित होगा क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपना कर्तव्य निभाएगा जिसके लिए वह सबसे योग्य है और दूसरों के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करेगा। प्लेटो ने राज्य को एक आदर्श के रूप में देखा जबकि न्याय उसका यथार्थ था। सेबाइन का कहना है कि रिपब्लिक में राज्य के सिद्धांत का परिणाम न्याय की अवधारणा है। उसने यह भी कहा कि प्लेटो के लिए न्याय एक बंधन है जो समाज को जोड़कर रखना है। प्लेटो का न्याय का विचार राजनीतिक समुदाय के बारे में उसकी परिकल्पना से निकला है और न्याय सामान्य हितों की पूर्ति करता है। एक चोरों के अड्डें को भी जीवित रहने के लिए न्याय के सिद्धांतों की आवश्यकता होगी। प्रत्येक राज्य को, अपनी नींव के रूप में, न्याय के सिद्धांतों की आवश्यकता होती है। राज्य में रहने वाले व्यक्तियों को आश्वस्त होना चाहिए कि उनका राज्य एक न्यायपूर्ण राज्य है और उन्हें अपने राज्य के न्याय के सिद्धांतों का पालन करना चाहिए। न्याय सर्वोच्य भलाई है जिसे लोग निजी व्यक्तियों के रूप में और एक विशाल राजनीतिक समुदाय के सदस्यों के रूप में प्राप्त कर सकते हैं।

3.3.1 तीन वर्ग और तीन आत्माएँ

एक राज्य में न्याय पर अपनी चर्चा को प्लेटो यह कहकर आरंभ करता है कि राज्य स्वाभाविक है क्योंकि कोई भी आत्मनिर्भर नहीं होता और मनुष्यों को जीवित रहने के लिए एक दूसरे की आवश्यकता होती हैं। प्लेटो कहता है कि एक राज्य में श्रम के विभाजन को बनाए रखना आत्मनिर्भरता में शामिल होना है। एक सफल राजनीतिक समुदाय को तीन कार्य करने पड़ते हैं – उत्पादन, संरक्षण (रक्षा) और राजनीतिमत्ता (शासन करना)। अतः, न्याय का अर्थ, कार्यात्मक विशेषज्ञता पर आधारित इन तीन क्रियाओं की पूर्ति करना होगा। यह सुनिश्चित करेगा कि न्याय प्रचलित होगा क्योंकि न केवल सामान्य हित की पूर्ति होगी बल्कि व्यक्तिगत सुख और खुशहाली की भी देखभाल की जाएगी क्योंकि व्यक्ति करते हैं; जो पाते है और उनके व्यक्तिगत चित्त के बीच समन्वय होता है। कार्यात्मक विशेषज्ञता के आधार पर, प्लेटो एक राज्य में तीन प्रकार के वर्गों को प्रस्तुत करना है (जिन्हें तीन वर्गों और तीन आत्माओं का भी नाम दिया जाता है, एक ऐसा विचार जिसे प्लेटो ने पाइथागोरस से उधार लिया)।

- शासक : प्रत्येक राज्य को शासन करने के लिए शासकों की आवश्यकता होगी, जिनका कार्य नीति संबंधी निर्णय लेना होगा।
- सहायक : यह योद्धाओं का वर्ग है जिसका सैन्य कार्य है और ये योद्धा अभिभावकों का हिस्सा होते हैं।
- कारीगर : इस वर्ग को आर्थिक कार्य निभाना पड़ता है और इसमें वे सब शामिल होते हैं जो वस्तुओं का उत्पादन करते हैं और सामाजिक दृष्टि से अनिवार्य सेवाएँ प्रदान करते है; उदाहरण के लिए, व्यापारी, किसान इत्यादि।

प्रत्येक वर्ग कुछ विशेष सद्गुणों का प्रदर्शन करता है। शासक वर्ग के पास विवके का सद्गुण होना चाहिए और उसे संपूर्ण राज्य पर उचित प्रकार से शासन करने का ज्ञान होना चाहिए। चूंकि सहायक वर्ग को राज्य की रक्षा करनी पड़ती है, इसके सदस्यों के पास साहस का सद्गुण होना चाहिए। कारीगरों को अपने मनोविकारों पर अंकुश लगाने के लिए अपने संयम या आत्मनियंत्रण को दर्शाना होगा। उन्हें यह समझना होगा कि उन्हें राज्य में एक आर्थिक क्रिया को निभाना है और सम्पत्ति या पदवी पर स्वामित्व के कारण

उन्हें शासन जैसे अन्य कार्यों को हथियाने के लिए प्रेरित नहीं होना चाहिए। इसे संभालने के लिए वे सुसज्जित नहीं होते।

आत्मा	हित	वर्ग	सद्‌गुण
बुद्धि	ज्ञान	दार्शनिक	विवेक
उत्साह	मान	योद्धा	साहस न्याय
इच्छा	विलास	साधारण व्यक्ति	संयम

आकृति 1/रेखाचित्र 1 – प्लेटो के तीन वर्ग और उनके सद्‌गुण प्लेटो के आदर्श राज्य में श्रम का विभाजन, सद्‌गुण का विभाजन भी होता है। श्रम के विभाजन में जिनकी उच्च भूमिका होती है, उनके पास सद्‌गुण भी उच्चकोटि का होता है। चूंकि सख्त शैक्षणिक प्रक्रिया के कारण शासकों के पास ज्ञान या विवेक होता है, उनके पास संपूर्ण सद्‌गुण होता है, जबकि, अन्य दो वर्गों के पास अधूरा सद्‌गुण होता है। उन्हें न्याय, सौंदर्य, साहस और सत्य जैसे विचारों और अन्य नैतिक गुणों का ज्ञान होता है जिन्हें प्लेटो ने 'आकार' कहा है। प्लेटो के अनुसार, प्रत्येक हस्ती जिसका हमारे विश्व में अस्तित्व है, वह उस वस्तु के आकार की अपूर्ण नकल है जिसका एक अनुभवातीत क्षेत्र में अस्तित्व होता है। केवल विवेक से युक्त शासक इन आकारों को देख सकते हैं और केवल वे सुनिश्चित कर सकते हैं कि न्याय, जहाँ तक संभव हो सके, अपने रूप से मेल खाता है। प्लेटो के लिए शिक्षा, मानव आत्मा का रूपांतरण करने के लिए नैतिक परिवर्तन का एक आवश्यक उपकरण था। यह अपने सामाजिक कार्यों के पालन और संतृप्ति प्राप्त करने में सुविधा प्रदान करेगा। रूसों ने प्लेटो के रिपब्लिक को शिक्षा पर लिखा गया अब तक का सबसे उत्कृष्ट ग्रंथ माना। प्लेटो की शिक्षा प्रणाली ने एथेन्स और स्पार्टा के शिक्षा प्रतिमानों के सर्वश्रेष्ठ तत्वों को सम्मिलित किया। एथेन्स से उसने रचनात्मकता, श्रेष्ठता और व्यक्तिगत प्रशिक्षण को चुना, जबकि स्पार्टा से प्लेटो ने नागरिक प्रशिक्षण की विशेषता को प्राप्त किया। प्लेटो की शिक्षा प्रणाली के विवरण अगली इकाई में दिए गए हैं।

प्लेटो के न्याय की अवधारणा को वितरणात्मक कहा जा सकता है क्योंकि इसका अर्थ एक व्यक्ति को उसका श्रेय देना था जैसे कौशल और प्रशिक्षण, जबकि बदले में, उस व्यक्ति को जिम्मेदारी के साथ अपना कर्तव्य निभाना होगा। व्यक्तिगत क्षमताओं में अंतर के बारे में अपने तर्क को साबित करने के लिए प्लेटो ने धातुओं के मिथक के माध्यम से एक 'महान झूठ' का प्रयोग किया जो शासको द्वारा बोला जाना था। यह मिथक इस विचार का प्रचार करेगा कि पृथ्वी की संतान के रूप में, सभी अपने शरीर में किसी सोने के अवयव के साथ पैदा हुए, सहायक चाँदी के साथ जबकि कारीगरों के शरीर में पीतल के अंश होते थे। इस महान झूठ ने दो उद्देश्यों की पूर्ति की। सभी लोग इस पर विश्वास करेंगे कि वे एक विशाल परिवार के सदस्य हैं जिसके अन्य सदस्य उनके भाई हैं। दूसरा, सभी जीवन में अपनी स्थिति को स्वाभाविक रूप से, उन गुणों के अनुकूल स्वीकार करेंगे जिनके साथ वे पैदा हुए थे और इस प्रकार, कार्यात्मक विशेषज्ञता को कायम रखेंगे। प्लेटो के राज्य में शासकों का चयन करने के लिए एक विस्तृत प्रणाली थी और कोई भी बच्चा, लिंग और वर्ग की परवाह किए बिना, शासक बन सकता था यदि वह बालक या बालिका दार्शनिक यथार्थों को सीखने की क्षमताओं को प्रदर्शित करता या करती। प्लेटो ने जन्म पर नहीं,

योग्यता पर आधारित समाज का समर्थन किया। उसे विश्वास नहीं था कि प्रतिभा और कौशल को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया जा सकता है।

3.3.2 साम्यवादी सिद्धांत

प्लेटो शासक वर्ग से इच्छा की वस्तुओं को हटाना चाहता था। उसने तर्क दिया कि एक व्यक्ति के लिए, अपने परिवार की खातिर, सामान्य हित के विरुद्ध जाना आसान था। अतः प्लेटो ने शासकों के लिए निजी संपत्ति और परिवार का उन्मूलन किया क्योंकि यह भाई–भतीजावाद, पक्षपात, गुटबंदी और अन्य भ्रष्ट आचरणों को प्रोत्साहित करना है। प्लेटो चाहता था कि शासक अपने निजी हितों की जगह, सामान्य हित को प्रोत्साहित करें। उसने सुझाव दिया कि शासकों को एक साथ रहना चाहिए जिस प्रकार सैनिक एक बैरेक में रहते हैं। साधारण भोजन और वस्त्रों की उनकी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति कारीगरों द्वारा की जानी थी। भविष्य के शासकों के एक समुच्चय को सुनिश्चित करने के लिए संभोग विनियमित होगा, परन्तु यह किसी पारिवारिक संरचना के बाहर होगा। बच्चों पर सबका साझा अधिकार होगा और वे अपने असली माता–पिता को नहीं जानेंगे और राज्य को ही अपना परिवार मानेंगे। बच्चों की देखभाल के लिए, राज्य द्वारा कायम किए गए शिशु गृह होंगे। प्लेटो का साम्यवाद सत्ताधारी अभिजात वर्ग पर लागू होता है, न कि बहुसंख्यक आबादी पर।

3.3.2.1 प्लेटो और मार्क्स का साम्यवाद : एक तुलना

प्लेटो और मार्क्स के बीच समय का एक बड़ा अंतराल है और जिस सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक वातावरण में उन्होंने साम्यवाद पर अपने विचार प्रस्तुत किए, उसमें पूर्ण रूप से अंतर है। प्लेटो ने शासक वर्ग से इच्छा की वस्तुओं को हटाने के लिए वैराग्य के साम्यवाद का समर्थन किया, उन्हें समान रूप से वितरित करने के उद्देश्य से नहीं। इसे 'कोइनोनिया' भी कहा गया, जिसका अर्थ–ग्रीक भाषा में भाईचारा या सहभागिता होना है। दोनों के बीच में अनेक भेद हैं। अर्नेस्ट बार्कर ने प्लेटो के साम्यवाद को कुलीन और अर्ध–साम्यवाद कहा क्योंकि वह केवल शासक वर्ग पर लागू होता था जबकि मार्क्स के साम्यवाद की प्रकृति सार्वभौमिक थी। प्लेटो का साम्यवाद सम्पत्ति और परिवार पर लागू होता था जबकि मार्क्स के साम्यवाद का संबंध उत्पादन के साधनों से था। मार्क्स द्वारा साम्यवाद को, वर्ग भेदों को नष्ट करने के लिए और एक वर्गहीन और राज्यहीन समाज के निर्माण के लिए, एक हथियार के रूप में प्रस्तावित किया गया था। दूसरी ओर, प्लेटो ने राज्य में सामंजस्य को बनाए रखने के लिए वर्ग पदानुक्रम को कायम रखने के लिए साम्यवाद को प्रस्तावित किया।

3.3.3 व्यक्तिगत और राजकीय स्तर पर न्याय

प्लेटो का दावा था कि एक न्यायपूर्ण व्यक्ति में, दार्शनिक तत्व (विवेक) उसकी आत्मा पर शासन करना है। एक व्यक्ति की आत्मा को सामंजस्य में होना चाहिए और उसकी तर्कबुद्धि, उत्साह और क्षुधा को एक दूसरे के साथ उचित संबंध में होना चाहिए ताकि वह अपनी हदों को पार न करें। एक न्यायपूर्ण व्यक्ति अपने स्वयं का कार्य करना है और दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता। वह केवल अपना हिस्सा लेता है और दूसरे के हिस्से की माँग नहीं करना। सुकरात ने कहा कि न्याय का अर्थ अपने काम से काम रखना और दूसरों के साथ हस्तक्षेप न करना होता है। एक अन्यायपूर्ण व्यक्ति में, आत्मा या चित्त में श्रम का विभाजन टूट चुका होता है और उसकी आत्मा पर उसकी तर्कबुद्धि नहीं बल्कि उसके मनोभाव और इच्छाएँ राज करते है। राज्य के स्तर पर, न्याय उस समय उपस्थित

होगा जब प्रत्येक वर्ग समाज में अपने समुचित स्थान को कायम रखेगा और राज्य में विभिन्न सद्‌गुणों के बीच सामंजस्य को सुनिश्चित करेगा। प्लेटो ने, फिर भी, एक पहलू को अनसुलझा छोड़ दिया। उसने इस बात पर बल दिया कि कारीगर स्वेच्छा से अपने आपको शासक वर्ग के अधीन करेंगे, परन्तु यह अधीनता कितने समय तक चलेगी, इस संबंध में प्लेटो अनिश्चित था। उसने बल और अलंकारिक अनुनय के उपयोग की भी सिफारिश की है जिससे नियंत्रण और निगरानी हो सकती है। इसने ये चिंताएँ उत्पन्न कीं कि क्या आदर्श राज्य खुशहाल भी होगा। रिपब्लिक के अंत में प्लेटो ने एक अन्यायपूर्ण जीवन की दुर्दशा और न्यायपूर्ण जीवन की सुख–शांति के बीच विषमता पर विशेष बल दिया है। उसने आदर्श राज्य के पतन की चर्चा की है, यह तर्क देते हुए कि राज्य का विघटन हो जाएगा क्योंकि यह एक मानवीय संस्था है जो एक परम सत्य का अधूरा निरूपण है। परिवर्तन इस इंद्रिय जगत की प्रकृति में है और आदर्श राज्य कोई अपवाद नहीं हैं। राज्य का पतन शासक वर्ग से प्रारंभ होता है जो संपत्ति के आकर्षण से भ्रष्ट हो जाना है और इच्छा, विवेक और तर्कबुद्धि पर राज करने लगती है। ये नागरिकों को दास बना देंगें और साहस नया सद्‌गुण बन जाएगा। सम्मान को ज्ञान से ऊँचां माना जाएगा और इस नई प्रकार की सत्ता को सम्मानतंत्र कहा जाएगा। एक राज्य जिस पर सहायकों का शासन होगा। सम्मानतंत्र को अल्पतंत्र या कुछ धनी लोगों के शासन के आगे झुकना पड़ेगा और अल्पतंत्र लोकतंत्र या बहुमतों द्वारा शासन के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा। प्लेटो ने इस बात पर बल दिया कि मनुष्य अपने सामाजिक वातावरण की उपज होते हैं और यदि सामाजिक व्यवस्था भ्रष्ट हो जाए तो वे भी भ्रष्ट हो जाएँगे।

3.3.4 आलोचनात्मक मूल्यांकन

प्लेटो के न्याय की अवधारणा की अनेक कारणों से आलोचना की गई है।

पहला, प्लेटो का विचार मुक्तिकारी प्रतीत हो सकता हैं परन्तु इसने गोपनीयता और व्यक्तित्व के लिए कम सम्मान के साथ अत्यधिक अनुशासन को सूचित किया। यह सुनिश्चित करने के लिए कि पारिवारिक जीवन स्वार्थपरता जैसे दुष्प्रभावों से बिगड न जाए, प्लेटो ने भावात्मक बंधन का उन्मूलन कर दिया तो एक परिवार एक व्यक्ति के लिए उपलब्ध करता हैं। प्लेटो के लिए, भावना और मनोवेग की तुलना में, व्यवस्था और सामंजस्य अधिक महत्वपूर्ण रहे हैं। राज्य विवेकी व्यक्तियों द्वारा नियंत्रित होता है क्योंकि आत्मा तर्कबुद्धि द्वारा नियंत्रित होती है, परन्तु यह नियंत्रण इतना निरंकुश होता है कि यह तानाशाही के सदृश होता है। प्लेटो के विचारों में मुक्ति और दमन के बीच की सीमाएँ धुँधली हो जाती हैं।

दूसरा, राज्य में श्रम के विभाजन को कायम रखने के प्लेटो के प्रस्ताव में एक प्रधान असंगति है। व्यक्तियों का विभिन्न वर्गों में वर्गीकरण करने के लिए और शासकों के लिए विस्तृत शिक्षा के लिए सुपरिष्कृत प्रबंधों के होने के बावजूद, प्लेटो फिर भी चिंतित है कि शासक भ्रष्ट हो सकते हैं और अविवेकी तरीके से शासन कर सकते है। इसी कारण से, प्लेटो वे शासकों के लिए साम्यवाद की प्रणाली स्थापित की ताकि वे अपनी इच्छाओं को मिटा सकें। परन्तु महत्वपूर्ण समस्या यह है कि यदि सद्‌गुण ही ज्ञान है, तो शासक अन्यायर्पूण तरीके से कार्य करने के लिए कैसे आकर्षित हो सकते हैं। सुकरात ने आग्रह किया कि यह संभव नहीं है, परन्तु प्लेटो ने सुकरात के उसी आधारवाक्य पर संदेह प्रकट किया जिसे वह प्रमाणित करने निकला था।

तीसरा, प्लेटो का राजनीतिक सिद्धांत अभिजातवाद द्वारा दूषित है क्योंकि उसके आदर्श राज्य में राजनीतिक निर्णय लेना कुछ दार्शनिक शासकों के हाथों में था जिनका रूझान सामान्य हित की ओर होगा। फिर भी, प्लेटो इतने प्रबल तरीके से अभिजातवादी था कि उसका मानना था कि मनुष्यों के विशाल बहुमत के पास अपने लिए महत्वपूर्ण चीज़ों पर निर्णय लेने के लिए तर्कबुद्धि नहीं होती। यहाँ तक कि वह उन्हें अपने शासकों द्वारा लिए गए निर्णय को आँकने में भी अक्षम मानता था। यह तर्क दिया जा सकता है कि तर्कबुद्धि के आधार पर मनुष्यों के वर्गीकरण द्वारा प्लेटो ने एथेन्स लोकतांत्रिक संस्थाओं पर 'प्रहार' किया। प्लेटो द्वारा एक जवाबदेह सरकार के विचार को कमज़ोर करने के लिए शासक वर्ग की अनियंत्रित प्रभुसत्ता के सिद्धांत का उपयोग करने के लिए कार्ल पॉपर ने उसकी आलोचना की। पॉपर व अन्य आलोचकों ने ध्यान दिलाया है कि प्लेटो की तानाशाही की धारणा, 'महान झूठ' सृजननविज्ञान, और नाज़ीवाद और स्टालिनवाद जैसे आधुनिक सर्वाधिकारवादी विचारधाराओं के सदृश हैं।

चौथा, प्लेटो का नागरिकता का विचार सहभागी नहीं था, बल्कि सत्ता के प्रति आज्ञाकारिता था। व्यक्ति का अस्तित्व समाज और राज्य के लिए होता था, अतः वह अपने आप में साध्य नहीं अंत का साधन था। प्लेटो का राज्य अत्यंत शक्तिशाली था और उसने एकता को विविधता से अधिक महत्व दिया। अरस्तू ने भी प्लेटो के एकता के विचार की आलोचना की। एक राज्य को एक सख्त एकनिष्ठता को न खोजकर, जैसी कि रिपब्लिक में प्रस्तावित की गई, विविध तत्वों के समन्वय में उस एकता को प्राप्त करना चाहिए।

पाँचवां, प्लेटो का न्याय सदाचारी और नैतिक सिद्धांतों पर आधारित है और इस कारण से, अप्रवर्तनीय है। यह समाज के हित में आत्मनियंत्रण को सर्वाधिक महत्व देता हैं जो उसे विभिन्न व्यक्तियों द्वारा अतिक्रमण के लिए असुरक्षित बना देता है।

अन्त में, जर्मन दार्शनिक फ्रेडरिक नीत्से ने एक झूठ (धातुओं के मिथक) की मदद से एक न्यायपूर्ण और उचित रूप से व्यवस्थित समाज की स्थापना करने के लिए प्लेटो की आलोचना कीं। प्लेटो के तर्कों में, सामाजिक व्यवस्था के कारण कभी स्पष्ट नहीं हो पाए। महान झूठ प्लेटो के इस दावे के विपरीत है कि न्याय, ज्ञान या सत्य के समरूप है जबकि एक असत्य अन्याय का प्रतीक है। प्लेटो ने अपने आदर्श राज्य को एक झूठ या एक अन्यायर्पूण कृत्य के द्वारा बनाए रखने का प्रयास किया। इसने यह संकेत दिया कि प्लेटो ने भी राजनीति को सुधारने में सत्य की सीमित क्षमता को पहचाना।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) प्लेटो ने महान झूठ का सहारा क्यों लिया ?

.....
.....
.....
.....
.....

2) प्लेटो के साम्यवाद की विशेषताओं का विवेचन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 प्लेटो और भारतीय राजनीतिक विचारक

3.4.1 प्लेटो और कौटिल्य

प्राच्य और पाश्चात्य विचारकों के बीच निरंतर तुलनाएँ होती रहती है। प्लेटो जैसे पाश्चात्य की तुलना प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन की महान हस्ती, कौटिल्य के साथ की जा सकती है। ऐसा माना जाता हैं कि कौटिल्य का जन्म लगभग उस समय हुआ जब प्लेटो की मृत्यु हुई, जो उसे करीब–करीब प्लेटो का समकालीन बना देता है। प्लेटो और कौटिल्य के बीच कुछ समानाताएँ हैं।

- दोनों विचारकों का मानना था कि राज्य पर विद्वानों और विशिष्ट वर्गों का शासन होना चाहिए, एक विचार जो लोकतंत्र की भावना के विरुद्ध है।
- वे आम आदमी के प्रति अपनी घृणा भी साझा करते हैं। प्लेटो ने कहा कि आम आदमी क्षुधाओं की गठरी के सिवाय कुछ नहीं होता जबकि कौटिल्य ने कहा कि आम आदमी असंगत और अस्थिर होता है।
- उनकी सामाजिक संरचना की अवधारणा के लिए पदानुक्रम और कार्यात्मक विशेषज्ञता महत्वपूर्ण थे। प्लेटो ने तीन वर्गों की अवधारणा प्रस्तुत की और दासता का पक्ष लिया जबकि कौटिल्य के अर्थशास्त्र में, जाति प्रथा को कायम रखा गया है। प्लेटो ने औपचारिक रूप से दासता की कभी चर्चा नहीं की और उसकी कृतियों, दि रिपब्लिक और दि लॉज़ में उसके द्वारा की गई कुछ टिप्पणियों में से उसके विचार को उद्धत करना पड़ता है।
- कौटिल्य ने इंद्रियों पर विजय (इंद्रियजय) का समर्थन किया जो प्लेटो के सद्‌गुण की अवधारणा से मिलती जुलती है जो स्वयं या अपने भीतरी शत्रु पर विजय का पक्ष लेती है।
- दोनों अपने राजा का सैन्य वर्ग से होना पंसद करते हैं। प्लेटो का शासक कौटिल्य का क्षत्रिय स्वामी है दोनो प्राचीन महानों के बीच कुछ अंतर भी थे। प्लेटो कुलीनों द्वारा दो कार्य किए जाने के पक्ष में था, शासन करना और बौद्धिक क्रिया करना। दूसरी ओर, कौटिल्य चाहता था कि ब्राह्मण बौद्धिक क्रिया करें, जबकि शासन क्षत्रिय राजा द्वारा किया जाएगा। प्लेटो एक दार्शनिक था जबकि कौटिल्य एक दार्शनिक होने के अलावा, एक मंझा हुआ राजनीतिज्ञ भी था। कौटिल्य ने कूटनीति और विदेश नीति के क्षेत्र के प्रति भारी योगदान दिया है, जबकि प्लेटो की कृतियों में इन पहलुओं का अधिक उल्लेख नहीं मिला।

3.4.2 सुकरात, प्लेटो और गाँधी

एम.के. गाँधी सुकरात द्वारा प्रभावित थे और दक्षिणी अफ्रीका में अपने वास के दौरान, उसके साथ तादात्म्य स्थापित करने लगे थे। सत् 1908 में गाँधी ने प्लेटो की कृति 'अपॉलजी' का अँग्रेजी से गुजराती में अनुवाद किया। यह पुस्तक इस बारे में है कि 399 ई. पू. में एथेन्स में, सुकरात के ऊपर मुकदमा दायर हुआ तो उसने अपना बचाव किस प्रकार किया। गाँधी सुकरात के आत्मबलिदान, कर्त्तव्य–परायणता और नैतिक विश्वास द्वारा आकर्षित हुए। चूंकि प्लेटो और गाँधी, दोनों ही सुकरात द्वारा गहरे तरीके से प्रभावित हुए, यह आश्चर्यजनक नहीं है कि अपने विचारों में दोनों आदर्शवादी थे। उनके अनुसार, राजनीति और नीतिशास्त्र को अलग नहीं करना चाहिए, जबकि दोनों कर्त्तव्यों को अधिकारों से अधिक महत्व भी देते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) प्लेटो और कौटिल्य के बीच समानताओं पर प्रकाश डालें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) सुकरात के किन गुणों ने गाँधी को प्रभावित किया ?

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 सारांश

पाश्चात्य दार्शनिक परम्परा का अध्ययन प्लेटो की श्रेष्ठकृति, दि रिपब्लिक से प्रारंभ होता है। प्लेटो सहित यूनानी दार्शनिको ने न्याय की परिकल्पना समन्वय और व्यवस्था के रूप में की, चाहे उसका प्रयोग उन्होंने एक व्यक्ति, राज्य या सृष्टि के लिए किया। प्लेटो के न्याय का विचार, राजनीतिक समुदाय के बारे में उसकी दृष्टि से उत्पन्न हुआ और न्याय सामान्य हित की पूर्ति करना है। एक सफल राजनीतिक समुदाय को तीन कार्य करने पड़ते हैं – उत्पादन, संरक्षण (रक्षा) और राजनीतिमत्ता (शासन करना)। इन कार्यों को तीन वर्गों द्वारा क्रमशः किया जाना था – कारीगर, सहायक, शासक। अतः न्याय का अर्थ कार्यात्मक विशेषज्ञता पर आधारित इन तीनो क्रियाओं की पूर्ति करना होगा। प्लेटो का समाज अत्यधिक श्रेणीबद्ध, संरचनाबद्ध, योग्यता–उन्मुख और अनुशासित था जहाँ व्यक्तियों को आबंटित कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। शासकों को हर

इच्छा से मुक्त किया जाना था और साम्यवादी सिद्धांतों के तहत उनके पास निजी सम्पत्ति और परिवार नहीं हो सकता था। प्लेटो के साम्यवाद की प्रकृतिः तपोमय थी, बौद्ध 'मठो' में पाए जाने वाले जीवन से मिलती जुलती। गाँधी जैसा कोई व्यक्ति भी राजनेताओं से इसी प्रकार की जीवन शैली की माँग करना। प्लेटो के न्याय के सिद्धांत की अपने हिस्से की सीमाएँ हो सकती है, परन्तु उसका उद्देश्य समुदाय का कल्याण और विकास हासिल करना और सामाजिक समन्वय स्थापित करना था। यह अधिकारों और शक्ति की गैर–पहचान का प्रतीक था।

3.6 कुछ उपयोगी संदर्भ

- बंडी, बर्टरण्ड और अन्य. (सं.) (2011). *इंटरनेशनल एन साइक्लोपीडिया ऑफ पॉलिटिकल साइन्स* खंड 1. लंदन. सेज पब्लिकेशन्स.
- झा. शेफाली. (2018). *वेस्टर्न पॉलिटिकल थॉट – फ्रॉम एनशियट ग्रीक्स टू मॉडर्न टाईम्स.* नोएडा. पीयरसन इंडिया एड्युकेशन सर्विसेज़ प्राईवेट लिमिटेड.
- मुखर्जी. एस एण्ड एस. रामास्वामी. (2011). *ए हिस्ट्री ऑफ पॉलिटिकल थॉट : टू मार्क्स.* दिल्ली. पी एच आई लर्निंग प्राईवेट लिमिटेड.
- प्लेटो. (1945). *दि रिपब्लिक.* न्यूयॉर्क. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. (मूल ग्रंथ 360 ई. पू).
- सेबाइन, जी. एच. (1973). *ए हिस्ट्री ऑफ पॉलिटिकल थ्योरी.* नई दिल्ली. ऑक्सफोर्ड एण्ड आई बी एच पब्लिशिंग कं. प्राईवेट लिमिटेड़.
- स्क्रटन. रॉजर. (2007). *दि पॉलग्रेव मेक्सिल्लन डिक्शनरी ऑफ पॉलिटिकल थॉट.* हैंपशायर. पॉलग्रेव मेक्सिल्लन.

3.7 अपनी प्रगति जाँचें अभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 1

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित सूत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए

- सुकरात ने कहा कि मित्रो की मदद करने में चोरी करने और झूठ बोलने जैसे अनैतिक कृत्य शामिल हो सकते हैं।
- एक व्यक्ति को अपने मित्रों और शत्रुओं के बारे में गलतफहमी हो सकती है।
- थ्कसी को हानि पहुँचाना, उस कर्ता को कम न्यायपूर्ण या कम श्रेष्ठ बनाता है जबकि न्याय का संबंध श्रेष्ठता से होता है।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 2

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित सूत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए

- सभी व्यक्ति यह विश्वास करेंगे कि वे एक विशाल परिवार का हिस्सा हैं जिसके अन्य सदस्य उनके भाई हैं।

- सभी जीवन में अपने स्थान को स्वाभाविक रूप से, उन गुणों के अनुकूल स्वीकार करेंगे जिनके साथ वे पैदा हुए थें और इस प्रकार, कार्यात्मक विशेषज्ञता को कायम रखेंगें

2) आपके उत्तर में निम्नलिखित सूत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए

- साम्यवादी सिद्धांत जो केवल शासक वर्ग पर लागू होंगे
- शासकों के लिए कोई निजी सम्पत्ति या परिवार नहीं
- शासकों का साझा जीवन होगा, जैसे बैरेक में सैनिक रहते हैं
- भविष्य के शासकों के एक समुच्चय को सुनिश्चित करने के लिए विनियमित संभाग
- बच्चों पर सबका साझा अधिकार होगा अपने असली माता–पिता को नहीं जानेंगे और राज्य को ही अपना परिवार मानेंगे

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 3

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित सूत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए

- दोनो का विश्वास था कि राज्य पर विद्वानों और कुलीनों का शासन होना चाहिए
- आम आदमी के प्रति घृणा साझा करते हैं
- पदानुक्रम और कार्यात्मक विशेषज्ञता उनकी सामाजिक संरचना की अवधारणा के लिए महत्वपूर्ण थी
- दोनो ने इंद्रियों पर विजय और आत्म–नियंत्रण पर बल दिया
- दोनो ही पसन्द करते हैं कि राजा सैन्य वर्ग से हो

2) आपके उत्तर में निम्नलिखित सूत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए

- आत्म–बलिदान
- कर्तव्यपरायणता
- नैतिक विश्वास